कहानी

दावणी*

बामा

"मैंने इससे बार-बार कहा था कि हमारी बेटी को इतनी दूर मत भेजो। पर इसने सुना नहीं। अब हम दुनिया के दोनों सबसे ज़्यादा दुखी प्राणी, ज़िन्दा होते हुए भी अपनी जाई बेटी की सूरत नहीं देख सकते।" बार-बार यह बात दोहराते हुए दहाड़ें मार-मार कर रो रही थी अरुलई।

उसे इस तरह अपना सिर व छाती पीटकर रोते देख कर आई हुई औरतें उसे तसल्ली देने की कोशिश करने लगीं, परन्तु अरुलाई को चैन ही नहीं आ रहा था। घर के बाहर बरामदे में उसका पति इरुलप्पन भी लुटा-पिटा सा बैठा हुआ था।

वहां पर जमा भीड़ को देख कर ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने कोई भूत देख लिया हो, किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या कहें या क्या करें।

"किसी ने ऐसे ही नहीं कहा कि पैसे में पाताल को भी हिलाने की ताकत होती है। उसके पास बहुत पैसा है, वह सब कुछ दबा सकता है।"

जब इरूलप्पन के पिता ने यह कहा तो अरूलाई का भाई कलीअप्पन गुस्से से चीखा "तो वह पूरा कद्दू चावल के ढेर में छुपा सकता है और हम यहां बैठ कर बस तमाशा देखते रहेंगे।"

कलीअप्पन की उम्र बीस-पच्चीस वर्ष की होगी। जब से उसने सुना कि उसकी बहन की बेटी चेल्लाकिल्ली की अचानक मौत हो गई है तब से वह पागल सा घूम रहा था, हर वक्त कुछ न कुछ बड़बड़ता रहता। खबर मिलते ही उसने अपने बहनोई इरूलप्पन को साथ लिया और रात को ही कुप्पमपट्टनम के लिए रवाना हो गया। हालांकि उन लोगों ने बिलकुल भी वक्त ज़ाया नहीं किया था फिर भी उन्हें चेल्लाकिल्ली का मृत शरीर देखे बिना ही वापस लौटना पड़ा।

चेल्लाकिल्ली 11 साल की थी। उसका शरीर पूरी तरह से भर चुका था। अरूलई के सात बच्चों में से पहले चार मर गए थे और बचे तीन में से चेल्लाकिल्ली सबसे छोटी थी। इरूलप्पन और अरूलई जगन्नाथ नायक्कर के खेतों में काम करते थे। उनके पहले दो बेटे तीसरी कक्षा के आगे नहीं पढ़ सके थे। वो घर की दो भैंसों की देखभाल करते, घास काटते, खिलाते चराते और कभी-कभी मज़दूरी भी करते थे।

इरूलप्पन की बड़ी इच्छा थी कि उसकी बेटी पढ़ सके। उसने किसी तरह से अपने मन को समझाया कि काम के लिए वह अपनी बेटी को घर से दूर भेजेगा।

जब चेल्लाकिल्ली पांचवीं कक्षा में थी तो एक दिन ज़मींदार ने उससे पूछा "ऐ इरूलप्पा तुम्हारी बेटी क्या कर रही है आजकल?" "वह पांचवीं कक्षा में पढ़ रही है, सामी। इसीलिए मैं इतनी मेहनत कर रहा हूं। उसको आठवीं कक्षा तक ज़रूर पढ़ाना है चाहे इसके लिए मुझे कर्ज़ा क्यों न लेना पड़े" इरूलप्पन ने जवाब दिया।

"पोडा, पागल आदमी! आजकल आठवीं कक्षा तक पढ़ने का क्या फ़ायदा? कितने लड़के आठवीं तक पढ़ कर इधर-उधर बिना नौकरी के आवारागर्दी कर रहे हैं। अगर वह बारहवीं तक पढ़े तभी वह अध्यापिका की नौकरी के लिए अर्ज़ी दे सकती है।"

---

* *केरल में पहनी जाने वाली साड़ी।*

इरूलप्पन ज़मींदार के मिर्ची के पौधों में पानी दे रहा था, यह सुनकर सीधा खड़ा हो गया और अपने फावड़े का सहारा लेकर उसने हैरान होकर ज़मींदार की ओर देखा। "मैं तो उसे बहुत ऊंची तालीम देना चाहता हूं, सामी! परन्तु मेरे पास साधन नहीं है और हमारे गांव का स्कूल भी तो बस आठवीं कक्षा तक ही है।"

"मेरी बेटी कुप्पमपट्टनम में रहती है। उसने चिट्ठी भेजी है कि उसे घर के काम-काज में मदद करने के लिए एक लड़की की ज़रूरत है। अगर तुम हां कहो तो मैं तुम्हारी बेटी को उसके पास ले जाऊंगा। वो वहां रहेगी, खाएगी-पिएगी और जो थोड़ा बहुत काम होगा कर देगी। वहां पर एक बड़ा स्कूल है, उसे वहां पढ़ने दो। स्कूल जाने से पहले वह थोड़ा काम निपटा देगी और बाकी स्कूल से आने के बाद। वह मेरी बेटी की मदद करेगी, एवज़ में उसे कुछ पैसा भी हर महीने मिल जाएगा। क्या कहते हो?" उसने पूछा और जवाब का इंतज़ार करने लगा।

"मैं उसे पढ़ाई के लिए भेज भी दूं पर उसकी मां उसे नहीं जाने देगी, सामी! वह अपनी चेल्लाकिल्ली को खुद से अलग नहीं करेगी।"

"क्या कह रहे हो? जब भी तुम्हारा अपनी बेटी से मिलने का मन करे तो मुझे बता देना। मैं अपने खर्चे पर तुम दोनों को, उससे मिलाने ले जाऊंगा।"

ज़मींदार ने जब यह कहा तो इरूलप्पन की अपनी बेटी को लेकर महत्वाकांक्षा ने ज़ोर पकड़ा। वह यह सोचकर ही रोमांचित हो उठा कि उसकी बेटी अध्यापिका बनने के लिए पढ़ाई कर रही है।

"ठीक है, मैं अरूलई से इसके बारे में बात करूंगा और फिर आप को बताऊंगा, सामी" इरूलप्पन ने कहा और फिर पौधों में पानी देने लगा। सफ़ेद फूलों और लाल फलों से लदे पौधों को देखकर वह चेल्लाकिल्ली के इन पौधों की तरह खुशहाल जीवन की कल्पना करने लगा।

शाम को घर पहुंचते ही इरूलप्पन ने अरूलई को आवाज़ दी और ज़मींदार द्वारा कही गयी सारी बातें इस उम्मीद से दोहरा दीं कि वह उसके विचार से सहमत होगी।

"अगर तुम्हें अपनी लड़की से थोड़ा सा भी प्यार होता तो क्या तुम मुझसे यह बात पूछते? हमारी एक ही बेटी है और हमने उसे बड़े लाड़ प्यार से पाला है। हम उसे अपनी आंखों से दूर भेज कर कैसे जी सकते हैं? हमें उसके लिए ऐसी पढ़ाई नहीं चाहिए। उसे गांव में ही जितना पढ़ सकती है, पढ़ने दो, बस।"

परन्तु इरूलप्पन ने बात को वहीं खत्म नहीं किया। खाना खाते हुए भी वह इसी बात की चर्चा करता रहा। "मैं चेल्लाकिल्ली को ऐसे पाल रही हूं कि उसे एक छोटी सी चीज़ भी यहां से उठा कर वहां नहीं रखने देती। हमें जीवित रहने के लिए अपनी मासूम बच्ची से कहीं और जा कर घर का काम कराने की कोई ज़रूरत नहीं है। उसे हमारे साथ ही रहने दो, चाहे उसे पीने के लिए कुडू मिले या पानी! अरूलई की भड़ास सुन कर इरूलप्पन कुछ देर के लिए ख़ामोश हो गया।

"कुछ देर बाद पान खाते हुए उसने कहा, "एदा, थोड़ी देर के लिए ज़रा सोचो। क्या वह ज़िन्दा रहने के लिए कड़ी मजदूरी करने जा रही है? नहीं, वह स्कूल जाएगी और खाली होने पर घर के काम-काज में थोड़ी मदद कर दिया करेगी। और तो और हमारे ज़मींदार खुद उसे वहां ले जा रहे हैं। वह सारा इंतज़ाम कर देगें।"

इरूलप्पन ने अरूलई को समझाने की कितनी ही कोशिश की पर वह टस से मस नहीं हो रही थी। इसी वजह से दोनों के बीच रोज़ लड़ाई-झगड़ा होने लगा। आख़िर में ज़मींदार ने यह दिलासा दिया कि परीक्षा खत्म होते ही और छुट्टियां शुरू होते ही वह खुद चेल्लाकिल्ली को वापस ले आएगा, तो अरूलई ने आधे-अधूरे मन से हामी भर दी।

जैसे ही चेल्लाकिल्ली पांचवीं कक्षा पास कर छठवीं में पहुंची, इरूलप्पन ने स्कूल से उसका स्थानान्तरण पत्र लेकर ज़मींदार को दे दिया। चेल्लाकिल्ली पहली बार घर से दूर जा रही थी इरूलप्पन ने ज़मींदार से खास गुज़ारिश की कि वह उसके साथ जाने दें। परन्तु ज़मींदार ने उसे यह कह कर टाल दिया कि उसे अभी कटाई और बुवाई करनी है और चेल्लाकिल्ली को वह अकेले ही कुप्पमपट्टनम ले गया।

चेल्लाकिल्ली को काम करते हुए पूरे आठ महीने हो गए थे। इस पूरे समय में उसे एक बार भी वापस गांव नहीं लाया गया। जब भी ज़मींदार से पूछा जाता वह रूखाई से जवाब देता "क्या तुम्हारी बेटी गायब हो जाएगी? मैं अभी पिछले महीने ही वहां गया था, उससे मिला था। वह अच्छा खाना-पीना मिलने की वजह से मोटी हो गयी है। ज़्यादा काम भी नहीं है करने के लिए? तुम अपनी बेटी को अब देखोगे तो पहचान नहीं पाओगे।" यह कह कर वह अपने रास्ते चला गया।

"मैं सोच रहा था कि उसे कम से कम एक खत ही लिख दूं, इसलिए कृपा करके मुझे उसका पता दे दीजिए।" इरूलप्पन वह पता अपनी गली में रहने वाले एक पढ़े-लिखे व्यक्ति से पास ले गया और अपनी बेटी को एक चिट्ठी भेजी। उसने बहुत इंतज़ार किया, उसे भरोसा था कि उसकी बेटी जवाब लिखेगी पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

अरूलई उसके पीछे पड़ी रही कि वह उनकी बेटी से मिल कर आए। उसने घर खर्च में कटौती करके कुछ पैसे भी बचाए। "तुम कलीअप्पन को अपने साथ लेकर जाओ। ज़मींदार को बिना बताए यह पता ढूंढो और हमारी बच्ची से मिलो," बचाए हुए पैसे पति को थमाते हुए उसने कहा। साथ ही पोटली में चेल्लाकिल्ली के लिए भुने चावल और मूंगफली बांध दी।

इरूलप्पन जाने की तैयारी कर ही रहा था कि खबर आयी कि चेल्लाकिल्ली की अचानक मौत हो गई है। पहली बार ज़मींदार उनकी गली में खुद आया और इरूलप्पन के घर गया जिससे उसे बाहर बुला कर सारी बात साफ़ समझा सके। "फौरन चलो, कम से कम उसका चेहरा तो देख लें," उसने गमगीन होते हुए कहा।

ख़बर मिलते ही इरूलप्पन की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह अपने आप को कैसे संभाले और घर जाकर अपनी पत्नी को क्या बताए।

आख़िर कलीअप्पन ने ही उसे धीरज बंधाया और उसे अपने साथ कुप्पमट्टनम जाने के लिए राज़ी किया। और वहां पहुंचते ही कलीअप्पन समझ गया कि आख़िर वहां क्या हुआ होगा।

ज़मींदार की बेटी के घर के आगे भारी भीड़ जमा थी। जब उसके पिता ने उसका परिचय इरूलप्पन और कलीअप्पन से करवाया तो वह अपनी साड़ी के कोने से आंखे पोंछने लगी जैसे कि रो रही हो।

इरूलप्पन और कलीअप्पन के मुंह से एक शब्द भी न निकला। दुख में डूबे हुए वे सिर्फ़ बैठ कर खाली आंखों से उसकी ओर देखते रहे। ज़मींदार की बेटी ने कहा "कल इस समय वह बेचारी ज़िन्दा थी। मुझे क्या पता था कि बेचारी यूं अचानक मर जाएगी? वह बच्ची जो कुछ देर पहले बैठकर पढ़ रही थी अचानक अपने हाथ-पैर यहां वहां पटकने लगी और चक्कर खाकर गिर गई। मुंह से झाग निकलने लगे। मैं सकते में आ गयी और जैसे जम सी गयी। टैक्सी बुलाई और उसे फौरन शहर के अस्पताल ले गई जहां उसे चार-पांच ग्लूकोस की बोतलें चढ़ाई गईं। एक इन्जेक्शन की कीमत चार सौ रुपये थी परन्तु मैंने पैसे की परवाह नहीं की। उसने दो इन्जेक्शन लगे परन्तु इसके बावजूद उसकी जान नहीं बचाई जा सकी। मैं और क्या कर सकती थी" कहते हुए उसने अपनी आंखों से आंसू पोंछे।

डॉक्टर ने हमें फौरन उसे दफ़नाने की हिदायत दी। मैंने बहुत मिन्नतें कीं कि हम उसके मां-बाप का इंतज़ार करें परन्तु उन्होंने कहा कि लाश वहां ज़्यादा देर तक नहीं रखी जा सकती। अगर तुमने मुझे पहले बताया होता कि उसको ऐसी बीमारी है तो मैं उसे हरगिज़ काम नहीं करने देती। तुमने उसे यहां छोड़ दिया, मुझसे सब कुछ छुपाया। उसे तो मेरे ही घर में मरना था। इसके पहले कि बेटी की बात खत्म होती, ज़मींदार ने उठकर उसे सीने से लगा लिया।

ज़मींदार की बेटी के घर में रहने वाले चार-पांच किराएदार आगे आकर बोले, "जो होना था वह हो गया भाई। वह चाहे गांव में रहती या यहां अगर उसकी मौत आनी थी तो उसे कौन रोक सकता था? अब आप जो कर सकते हैं करें और इन लोगों को दया भाव के साथ विदा करें। यह कहते हुए उन्होंने माहौल को सहज बनाने की कोशिश की।

ज़मींदार ने इरूलप्पन को एक हज़ार रुपये देते हुए कहा, "कोई क्या कह सकता है? चाहे हम सालों साल रोएं पर जाने वाले क्या कभी लौट कर आते हैं? हौसला रखो। यह पैसे लो और गांव वापस लौट जाओ। दो दिन बाद मैं भी वापस आऊंगा।"

इरूलप्पन और कलीअप्पन ख़ामोश खड़े रहे। उन्होंने पैसे के तरफ नज़र तक न डाली। बोझिल कदमों से गांव की बस पकड़ने के लिए बस अड्डे की ओर चल दिए।

जैसे ही वे बस अड्डे पहुंचे उन्होंने चार-पांच लोगों से चेल्लाकिल्ली की मौत के बारे में बातें करते सुना जिसे सुन कर उनका खून जम गया।

"माना कि वे लोग रईस हैं पर यह कोई तरीका है कि किसी को घर में काम करने के लिए लाओ और फिर उसका खून कर दो। यह सारा खेल उस विधवा का है- उसने सब कुछ इतनी सफ़ाई से किया है कि सब कुछ हमेशा छुपा रहेगा।

"क्या हुआ अगर उसके पति की मृत्यु हो गयी है। क्या तुम जानते हो कि कितने आदमी उसने मुट्ठी में कर रखे हैं जो उसे सहारा देने के लिए तैयार हैं।"

"मैंने सुबह उस बच्ची को कपड़े धोते हुए देखा था दोपहर तीन बजे तक उस मनहूस औरत ने उसे मार दिया। पता नहीं बच्ची कौन से गांव की है? उस छिनाल विधवा ने उसे कैसे मारा?"

"उसे यहां पढ़ाई के बहाने लाया गया था। उससे दिन भर काम कराया जाता था। उस दस-बारह साल की बच्ची को सफ़ाई, खाना बनाना और सारे काम करने पड़ते थे। छोटी सी भी गलती होने पर उसके दोनों बेटे उसका घाघरा उठाकर, नितम्बों पर छड़ी से मारते थे। मेरी पत्नी ने मुझे यह बात बतायी थी।"

"कई बार उसके लड़के और उसके दोस्त उस बच्ची के साथ छेड़खानी करते थे। उनकी मां जानती थी, परन्तु वह सब कुछ अनदेखा कर देती थी। उस बच्ची को घर से बाहर कदम निकालने की इज़ाज़त नहीं थी।" पता नहीं उसे कैसे मारा, ज़हर पिलाकर या नशीली दवाई देकर।

"नहीं, नहीं। उसने बच्ची से कहा कि वह चावल का आटा पीसकर तीन बजे तक तैयार रखे और खुद शहर चली गई। काम खत्म करते-करते लड़की को चार बज गए। सुना है कि नाराज़ होकर उसे गर्दन पर एक लाठी से मारा गया था। गलत जगह पर चोट लगी और अगले ही पल लड़की ज़मीन पर पड़ी छटपटा रही थी। जब उसके मुंह से झाग निकलने लगे तब ये लोग घबरा गए और उसे डॉक्टर के पास ले गए, परन्तु उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। इसीलिए उन लोगों ने वापस आकर फौरन लाश को जला दिया। बच्ची के अप्पा और मामा आए थे परन्तु वे उसका मुंह भी नहीं देख पाए। इन लोगों ने आसपास के जानकार लोगों को पैसे देकर चुप करा दिया। बच्ची का पिता एक सीधा-साधा आदमी है। बिना कुछ कहे चला गया।"

कलीअप्पन के लिए यह सब असहनीय हो रहा था। गुस्से और मजबूरी से उबलते हुए वह अपने बहनोई को वापस गांव ले आया। उससे कहा कि वह अरूलई को इन सब बातों के बारे में कुछ न बताए।

जब ज़मींदार लौटा तो कलीअप्पन इरूलप्पन को लेकर उसके घर पहुंचा। ज़मींदार को देखकर इरुलप्पन गुस्से के बजाय दुख में डूब गया। उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। बस कलीअप्पन गुस्से में चीखता रहा और आश्चर्य की बात यह हुई कि ज़मींदार दोनों को घर के अन्दर ले गया और फिर प्यार और सहानुभूति से उन्हें ढाढ़स बंधाने लगा।

कलीअप्पन को ज़मींदार की चाल समझ में आ गई। "हमें बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो।" "देखो कलीअप्पन! इतनी बेशरमी से झूठ मत बोलो कि उसकी हत्या की गई है। ये लो, यह उसके भाग्य में लिखा था और वो चली गई। लो यह रखो, इसमें दो हज़ार रुपये हैं।

यह सुनकर कलीअप्पन और भी आग बबूला हो गया। "क्या मतलब है तुम्हारा? क्या तुम्हारी नज़र में चेल्लाकिल्ली के जीवन की कीमत सिर्फ़ दो हज़ार रुपये है?" और वह ज़मींदार को मारने के लिए आगे की ओर लपका।

ज़मींदार ने आराम से जवाब दिया, "कलीअप्पन गुस्से में होश मत गंवाओ। तुम्हें पता है कि मेरी बेटी कितने प्यार से चेल्लाकिल्ली की देखभाल करती थी। उसने मुझसे यहां तक कहा था कि चेल्लाकिल्ली को पहनने के लिए दावणी देनी चाहिए। वह तो उसे दावणी पहनाकर छुट्टियों में गांव लाने की सोच रही थी। पर इससे पहले वह ऐसा कर पाती यह सब हो गया। यहां देखो, अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं है तो यह वो दावणी है जो मेरी बेटी ने उसके लिए खरीदी थी। उसने चेल्लाकिल्ली के बाकी कपड़ों के साथ इस भी साथ रख दिया यह कहते हुए कि यह उसे हमेशा चेल्लाकिल्ली की याद दिलाएगी।" उसने कलीअप्पन को एक लाल रंग की दावणी दिखाई।

कलीअप्पन के क्रोध की कोई सीमा न रही। "तुमने कहा था कि तुम बच्ची को स्कूल भेजोगे परन्तु तुमने तो उसे शमशान पहुंचा दिया। और फिर भी तुम्हें यह बोलने की हिम्मत है। हमें पता है वहां क्या हुआ था। तुम और तुम्हारी दावणी।" कलीअप्पन ने गुस्से में दावणी एक तरफ फेंक दी और पैर पटकते हुए बाहर चला गया।

इरूलप्पन कुछ पल उस लाल दावणी को देखते हुए वहां खड़ा रहा। फिर जैसे उसने कुछ सोचा। फिर झुककर लाल दावणी उठा ली और वापस घर लौट गया।

अगली सुबह, ज़मींदार के घर के पिछवाड़े लाल दावणी से नीम के पेड़ पर एक लाश लटकती हुई नज़र आई।

बामा, *दलित साहित्य की जानी-मानी लेखिका हैं।*
वे वर्ग और शोषण संबंधी मुद्दों पर कहानियां लिखती हैं।

साभारः हारम-स्कारम सार—विमेन अनलिमिटेड प्रकाशन,
अंग्रेज़ी से अनूदित।